Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

बोधगम्यता (द्विभाषिक)

(भाग-1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSC03

दृष्टि The Vision

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

बोधगम्यता

(द्विभाषिक)

(भाग 1)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 8750187501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

पुस्तिका हेतु महत्त्वपूर्ण निर्देश

(Important Guidelines for the Booklet)

बोधगम्यता (द्विभाषिक) को तीन भागों में विभाजित किया गया है। तीनों ही भागों में गद्यांशों की अलग-अलग श्रेणियाँ हैं।

भाग-1: दार्शनिक, सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक।

भाग-2: पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, राजनीतिक और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी।

भाग-3: अंतर्राष्ट्रीय, अर्थव्यवस्था और विविध।

नोट: भाग-1 को गद्यांशों की दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है, जैसे- दार्शनिक तथा सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक। इनमें से प्रत्येक श्रेणी को दो खंडों में विभाजित किया गया है।

खंड-I: इस खंड में दिये गए गद्याशों के प्रश्नों के उत्तर विस्तृत व्याख्या सहित दिये गए हैं ताकि आप गद्याशों के प्रश्नों के उत्तर देने के तरीके को समझ सकें।

खंड-II: इस खंड में दिये गए गद्याशों के प्रश्नों के उत्तर बिना व्याख्या के ही दिये गए हैं। ये प्रश्न आपके लिये अभ्यास हेतु दिये गए हैं। आपको इनके उत्तर खंड-I में दिए गए उत्तरों (व्याख्या सहित) की समझ के आधार पर ही देने हैं।

Note: The booklet is divided into two categories such as- Philosophical, Socio-Economic & Cultural. Each category is divided into two parts.

Section-I: In this section answers are given in detail for the given passages, so you can understand the method of answering the questions from the passage.

Section-II: In this section answers for the given passages are without details. These are for your practice. You have to answer these questions on the basis of answers given in section-I.

DLP

विषय सूची (Contents)

1. दार्शनिक

खंड-I	(उत्तर व्याख्या-सहित)	5 – 20
खंड-II		21 – 30

2. सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक

खंड-I	(उत्तर व्याख्या-सहित)	31 – 76
खंड-II		77 – 124

3. यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा-2011 (उत्तर व्याख्या-सहित) 125 – 142

4. यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा-2012 (उत्तर व्याख्या-सहित) 143 – 164

5. यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा 2013 (उत्तर व्याख्या-सहित) 165 – 179

दार्शनिक *(Philosophical)*

Part-I

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

What is a dilemma? It is not clear at first sight that the term 'ethical dilemma' picks out a class of situations which all share the same common characteristics. So far we have offered a negative criterion: a moral dilemma is different from a merely difficult decision. In a dilemma, the difficulty arises from the very nature of the situation with which we are faced rather than our mere lack of wisdom or ethical knowledge.

It is true that, in ordinary speech, we are inclined to use the term 'dilemma' for any decision where we are uncertain which of two alternatives we should choose; in other words, as synonymous for a 'difficult decision'. However, as we have seen, what is problematic to one person may be much clearer to another person who has stronger moral perceptions or insight. If someone insists on calling every difficult decision a 'dilemma', then they still need a word for the variety of 'dilemma' which does not refer to something merely subjective in the mind of the agent, but rather denotes an objectively existing situation in the world. In the ideal example of a dilemma, there is an irresistable case for doing A, and also an irresistable case for doing B. But it is logically impossible to do both A and B. It follows that either one case can after all be resisted, or both can. To assert that both cases are (truly) irresistable would imply the existence of a irresistable case – combining the cases for A and for B – for seeking to do what is logically impossible: an absurdity.

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इनके नीचे दिये हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

दुविधा क्या है? प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट नहीं होता है कि "नैतिक दुविधा" शब्दावली एक ही तरह की कुछ ऐसी परिस्थितियों की पहचान करती है, जिनकी विशेषताएँ एक समान होती हैं। अब तक हम एक नकारात्मक कसौटी अपनाते आए हैं: नैतिक दुविधा एक महज़ कठिन निर्णय से भिन्न है। दुविधा की स्थिति में कठिनाई परिस्थिति की वास्तविक प्रकृति से उत्पन्न होती है, और ज्ञान अथवा नैतिक ज्ञान की कमी मात्र के चलते हमें इसका सामना करना पड़ता है।

यह सत्य है कि, आम बोलचाल में हमारा रुझान दुविधा शब्दावली को किसी भी ऐसे निर्णय के लिये प्रयोग करने के प्रति होता है, जहाँ हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं होते हैं कि दो विकल्पों में से किसका चुनाव करना है; दूसरे शब्दों में यह 'कठिन निर्णय' का समानार्थी प्रतीत होती है। जबकि, जैसा कि हम देखते हैं कि किसी एक व्यक्ति के लिये जो जटिल है, वही किसी अन्य व्यक्ति, जिसका नैतिक बोध अधिक मजबूत है, के लिये अधिक स्पष्ट एवं आसान हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी कठिन निर्णय को 'दुविधा' मानने पर बल देता है, तो ऐसे लोगों को दुविधा की विविधता के लिये एक ऐसे शब्द की आवश्यकता होती है, जो उस व्यक्ति के अपने दिमाग की उपज न हो, बल्कि समाज में किसी वास्तविक स्थिति के लिये व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने वाला शब्द हो। दुविधा के एक आदर्श उदाहरण के रूप में, एक कार्य A को करने का अनियंत्रित प्रकृति का मामला है, तो दूसरा कार्य B को करने का भी एक अनियंत्रित प्रकृति का मामला है। लेकिन तार्किक रूप से A और B दोनों को ही करना असंभव है। इससे यह बात निकलकर आती है कि या तो किसी एक कार्य को रोका जा सकता है, अथवा दोनों को। यह मानना कि दोनों ही मामले (वास्तव में) अनियंत्रित प्रकृति के हैं, इसका मतलब है कि कोई एक कार्य तो अनियंत्रित प्रकृति का है- A और B दोनों ही मामलों को एक साथ रखकर यह पता करना कि तार्किक रूप से क्या असंभव है: बेवकूफी है।

प्रश्नों के हल

1. In the first paragraph it is written that dilemma arises due to nature of the situation, whereas in second paragraph it is written that sometimes uncertain decision or choosing between two alternative commonly known as difficult decision is mistaken as 'dilemma'. Hence, (a) is the correct option.
2. Dilemma arises due to nature of the situation not due to lack of knowledge. Thus, 1 ruled out. It is written that what is problematic to one is clearer to another, Thus 2 is correct. Dilemma happens when there are two choices to be made and both are equally irresistible. Thus, 3 is correct if one is more lucrative over another, then it is not a dilemma. Hence, (c) is the correct option.
3. Both the Soldiers are sure about their positions therefore it is not dilemma, whereas doctor can use his skill only on one and both are his patients that makes him difficult to decide. Thus, 1 is correct and 2 is incorrect. Hence, (a) is the correct option.
4. Theme of the passage is centred around two concept 'dilemma' and 'difficult decision' and both are study are of decision making theory. Medical science is more about symptoms, disease and psychological journal are more about human behaviour and not how to take decisions. Philosophy journal may talk about reality, values, existene etc. which is not the theme of the passage. Hence, (d) is the best option.
5. Daniel Goleman argued that emotional intelligence can be at least as important as IQ in determining people life's chances. He put forward understanding of human emotions as one of the skills. Thus, (c) is correct. He didn't shown the importance or supremacy of emotional intelligence over intelligence quotient. Thus, (a) and (b) ruled out. Hence, (c) is the correct answer.

1. प्रथम परिच्छेद में इसका उल्लेख है कि दुविधा, परिस्थिति की प्रकृति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है, जबकि द्वितीय परिच्छेद में यह बात लिखी है कि कभी-कभी अनिश्चित निर्णय अथवा दो विकल्पों में से किसी एक का चयन करने को सामान्यत: कठिन निर्णय के रूप में जाना जाता है, गलती से इसे 'दुविधा' मान लेते हैं। अत: विकल्प (a) सही है।
2. दुविधा परिस्थिति की प्रकृति के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है, न कि ज्ञान की कमी से। अत: कथन 1 की संभावना नहीं है। इसका भी उल्लेख है कि जो किसी एक के लिये जटिल है, वही किसी अन्य के लिये सहज होता है। अत: कथन 2 सही है। दुविधा वहाँ उत्पन्न होती है, जहाँ दो विकल्पों में से किसी एक का चयन करना होता है, और दोनों ही अनियंत्रित प्रकृति के होते हैं। इस प्रकार 3 सही है, यदि एक विकल्प दूसरे की अपेक्षा अधिक लाभप्रद है तो यह दुविधा नहीं है। अत: विकल्प (c) सही है।
3. चूँकि दोनों ही सैनिक अपनी स्थितियों के प्रति आश्वस्त हैं, अत: यह दुविधा नहीं है, चूँकि डॉक्टर किसी एक मरीज पर ही अपनी दक्षता का प्रयोग कर सकता है, जबकि दोनों ही उसके मरीज हैं और यही बात उसके लिये जटिलता उत्पन्न करती है। अत: कथन 1 सही और कथन 2 गलत है, इस प्रकार विकल्प (a) सही है।
4. गद्यांश की विषयवस्तु दो संकल्पनाओं 'दुविधा' और 'कठिन निर्णय' पर केंद्रित है, और दोनों ही निर्णयन सिद्धांत के अध्ययन क्षेत्र से संबंधित हैं। चिकित्सा विज्ञान बहुत कुछ बीमारी के लक्षणों एवं बीमारी से संबंधित होता है। मनोविज्ञान के जर्नल का संबंध मानव व्यवहार से होता है न कि इससे कि निर्णय कैसे लिया जाए। दर्शनशास्त्र के जर्नल में यथार्थ, मूल्यों, अस्तित्त्व आदि की चर्चा होती है, जो गद्यांश की विषयवस्तु नहीं है। अत: विकल्प (d) ही सर्वोत्तम है।
5. डेनियल गोलमन का तर्क था कि लोगों के जीवन अवसरों को निर्धारित करने में भावनात्मक बौद्धिकता कम से कम बुद्धिलब्धि जितनी महत्त्वपूर्ण तो हो ही सकती है। उन्होंने मानवीय भावनाओं की समझ को एक कौशल के रूप में प्रस्तुत किया। अत: (c) सही है। उन्होंने बुद्धिलब्धि के ऊपर भावनात्मक बौद्धिकता के महत्त्व एवं प्रमुखता को स्थापित नहीं किया। अत: (a) और (b) की तो संभावना ही नहीं बनती। इस प्रकार (c) ही सही उत्तर है।

Part-II

Instructions: Read the following passage carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

"Economists, ethicists and businessmen persuade us that honesty is the best policy, but their evidence is weak. We hope to find data that would support their theories and thus perhaps, encourage higher standards of business behaviour. To our surprise, our pet theories fail to stand up. Treachery, we find, can pay. There is no compelling economic reason to tell the truth or keep one's word. Punishment for the treacherous in the real world is neither swift nor sure.

Honesty is, in fact, primarily a moral choice. Business people do tell themselves that, in the long run, they will do well by doing good. But there is little factual or logical basis for this conviction. Without values, without a basic preference for right over wrong, trust based on such self-delusion would crumble in the fact of temptation. Most of us choose virtue because we want to believe in ourselves and have other's respect and belief in us.

And for this, we should be happy. We can be proud of a system in which people are honest because they want to be, not because they have to be. Materially, too, trust based on morality provides great advantages. It allows us to join in great and exciting enterprises that we could never undertake if we relied on economic incentives alone.

Economists tell us that trust is enforced in the market place through risk of reputation. If you violate trust, your victim is apt to seek revenge and others are likely to stop doing business with you, at least under favourable terms. A man or woman with a reputation for fair dealing will prosper. Therefore, profit maximizers are honest. This sound plausible enough until you look for concrete examples. Cases that

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इसके नीचे दिये हुए प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश-1

''अर्थशास्त्री, नीतिशास्त्री और व्यापारी हमें विश्वास दिलाने का प्रयास करते हैं कि ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, लेकिन उनका प्रमाण कमज़ोर है। हम ऐसे आँकड़ों को प्राप्त करने की आशा करते हैं जो उनके सिद्धांतों को समर्थन दें और संभवत: व्यापार-व्यवहार के उच्च मानकों को प्रोत्साहित करें। हमारे लिये आश्चर्य की बात यह है कि हमारे पसंदीदा सिद्धांत टिके रहने में असफल हैं। हम देखते हैं कि छल-कपट लाभ पहुँचा सकता है। सत्य बोलने एवं अपना वचन निभाने का कोई ठोस आर्थिक कारण नहीं है। व्यवहार-जगत में छल-कपट के लिये दण्ड न तो तुरंत मिलता है, न ही सुनिश्चित है।

सही मायने में ईमानदारी, प्राथमिक रूप से, एक नैतिक चयन है। व्यापारी लोग अपने आप से कहते हैं कि लम्बे समय में वे सही करके ही अच्छा करेंगे। लेकिन इस धारणा के लिये तथ्यात्मक एवं तार्किक आधार बहुत कम है। गहरे मूल्यों के बिना, गलत के स्थान पर सही के पक्ष में मूलभूत प्राथमिकता के बिना अपने प्रति भ्रामक धारणाओं पर टिका विश्वास प्रलोभनों की स्थिति में टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। हममें से अधिकांश लोग सद्‌गुणों को इसलिये चुनते हैं क्योंकि हम खुद में विश्वास रखना चाहते हैं और दूसरों का सम्मान और विश्वास हासिल करना चाहते हैं।

और इसके लिये, हमें प्रसन्न होना चाहिये। हम एक ऐसी व्यवस्था पर गर्व कर सकते हैं जिसमें लोग इसलिये ईमानदार हैं क्योंकि वे ऐसा बनना चाहते हैं, न कि इसलिये कि उन्हें ऐसा बनना पड़ता है। भौतिक जगत में भी, नैतिकता पर आधारित विश्वास अत्यधिक लाभ प्रदान करता है। यह हमें कई महान और उत्साहजनक उद्यमों में शामिल होने की अनुमति देता है जिन्हें केवल आर्थिक उत्प्रेरकों पर निर्भर रहकर हम कभी भी आरंभ नहीं कर सकते थे।

अर्थशास्त्री हमें बताते हैं कि बाज़ार में प्रतिष्ठा के खतरे के माध्यम से विश्वास को बल प्राप्त होता है। यदि आप विश्वास तोड़ते हैं तो पीड़ित व्यक्ति आपसे बदला लेने को सही मानता है और आसार बनते हैं कि अन्य लोग, कम से कम अनुकूल परिस्थितियों में, आपके साथ व्यापार करना बंद कर दें। साफ-सुथरे व्यवहार के लिये प्रतिष्ठित पुरुष एवं महिला समृद्ध बन जाते हैं। इसलिये, अधिकतम लाभ कमाने वाले ईमानदार होते हैं। जब तक हम मजबूत उदाहरण न खोजने लगें, तब तक यह बात काफी विश्वसनीय लगती है।

सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक *(Socio-Economic and Cultural)*

Part-I

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

Nearly 10 percent of the world's economic resources are devoted to health care. But why do certain countries devote more resources to public health? Why are some countries better than others at achieving tangible health outcomes using the same level of economic resources? In this preliminary investigation, we use new data and measures from the World Health Organization (WHO) to examine cross-national variation first in the level of public and private expenditures on health, and then in the level of achievement of health outcomes. We find that autocracy, income inequality, ethnic heterogeneity, and persistent international hostilities significantly depress the amount of public resources allocated to health care. We also find that while private expenditures tend to be higher in unequal and heterogeneous societies, total health expenditures still fall far short of those in countries with similar income levels but that are more equal and homogenous. We further find, all other things equal, that countries that are rapidly urbanizing or have experienced a civil war tend to have poorer health.

The health of humanity varies enormously: by genetic endowment, environmental conditions, and access to health care; by age, gender, income level, and country. Some people live long healthy lives in peace and affluence; many others' lives are briefer and burdened by major disabilities from disease or injury, "Country" is itself a catch-all of macro-influences, including type of political regime, decisions to devote public and private resources to health, the distribution as well as the level of income within the country, urbanization, the privileged or unempowered position of racial, linguistic, or religious groups in the country, and the state's experience of violent civil conflict or military threats from neighboring states. Some of these

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

विश्व के लगभग 10 प्रतिशत आर्थिक संसाधन स्वास्थ्य संबंधी देखरेख के लिये समर्पित हैं। लेकिन कुछ देश सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिये अधिक संसाधनों का उपयोग क्यों करते हैं? समान स्तर के संसाधनों का उपयोग करके कुछ देश अन्य की अपेक्षा बेहतर स्वास्थ्य परिणाम क्यों अर्जित करते हैं? इस प्राथमिक जाँच-पड़ताल में, विभिन्न देशों के बीच स्वास्थ्य पर सार्वजनिक एवं निजी व्यय के स्तर में और उनके द्वारा अर्जित स्वास्थ्य परिणामों के स्तर में विद्यमान अंतर का परीक्षण करने के लिये हम विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के नए आँकड़ों एवं मापदण्डों का प्रयोग करेंगे। हम पाते हैं कि निरंकुशता, नृजातीय विविधता और नियमित अंतर्राष्ट्रीय युद्धस्थिति स्वास्थ्य के लिये सार्वजनिक संसाधनों के आवंटन की मात्रा को हतोत्साहित करते हैं। हम यह भी देखते हैं कि असमान एवं विविधतापूर्ण समाजों में निजी व्यय अधिक होता है, और इन देशों के समान आय स्तर वाले लेकिन अधिक समानतापूर्ण देशों की अपेक्षा इन देशों का कुल स्वास्थ्य व्यय बहुत कम होता है। इसके अतिरिक्त हम पाते हैं कि सभी बातें समान रहते हुए भी, ऐसे देश जहाँ तेज़ी से औद्योगीकरण हो रहा हो अथवा वहाँ कभी गृहयुद्ध हुआ हो, उनका स्वास्थ्य का स्तर कमजोर होता है।

आनुवंशिक वृत्ति, पर्यावरणीय दशाओं, और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच, इसके अलावा आयु, लिंग, आय स्तर और देश के आधार पर मानव स्वास्थ्य में अत्यधिक अंतर देखने को मिलता है। कुछ लोग शांतिपूर्वक दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन जीते हैं; जबकि बहुत से लोग बीमारी अथवा चोट की वजह से हुई अक्षमता के चलते अत्यंत छोटी एवं बोझिल ज़िंदगी जीते हैं। देश स्वयं ही स्थूल प्रभावों को समेटे हुए होता है, जिनमें राजनीतिक शासन, स्वास्थ्य के लिये सार्वजनिक एवं निजी संसाधनों के आवंटन का निर्णय, देश में आय के वितरण के साथ-साथ उसका स्तर, नगरीकरण, देश में प्रजातीय, भाषाई, अथवा धार्मिक समूहों की विशेषाधिकार प्राप्त अथवा नि:शक्त स्थिति तथा देश में हुए हिंसक नागरिक संघर्ष अथवा पड़ोसी राज्यों से सैन्य खतरे शामिल हैं। इनमें से कुछ प्रभाव

Part-II

Instructions: Read the following passages carefully and answer the questions given below it.

PASSAGE – 1

"The implicit rationale for or the philosophical foundation of the intellectual property rights system in India is embodied in three underlying objectives. First, it seeks to strike a balance between the interests of producers on the one hand and consumers on the other, that is, those who develop the scientific knowledge or innovate and those who use the goods or services derived there from. Needless to say, every country attempts the same, but where the balance is reached depends on the level of development. The levels of income in the economy and the stage of development in the society are thus particularly important in this context.

The logic of exclusions from patentability follows from this objective. Methods of horticulture and agriculture, as also food, are excluded because such a large proportion of the population is dependent on agriculture for a livelihood and the purchasing power of poor even for food is limited, while drugs and medicines are excluded because millions do not have access to basic health care.

Second, it endeavors to ensure rewards for the owners of knowledge or the innovators but, at the same time, aims to place a limitation on the monopoly profits or the quasi-rents which may be appropriated by the entity that commercializes the technology or transforms the scientific knowledge into a marketable product. This is the logic of compulsory licensing. There are two underlying principles set out in the Patent Act: patents are granted to encourage inventions and to secure that the inventions are worked in India and patents are not granted merely to enable patentees to enjoy a monopoly for the importation of the patented article.

Third, it attempts to create an environment which is conducive for the diffusion of existing technologies and the development of new technologies, in so far as technology is a basic determinant of development in

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा इन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दें।

गद्यांश – 1

''भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों की व्यवस्था में अंतर्निहित औचित्य अथवा इसका दार्शनिक आधार तीन मूल उद्देश्यों में सम्मिलित है। पहला, यह एक ओर उत्पादकों के और दूसरी ओर उपभोक्ताओं के हितों के बीच संतुलन साधना चाहता है, अर्थात् उनके जो वैज्ञानिक ज्ञान अथवा नवाचार का विकास करते हैं तथा उनके, जो उनसे व्युत्पन्न वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं, के बीच संतुलन साधना चाहता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रत्येक देश यही प्रयास करता है, परन्तु संतुलन कहाँ पहुँचता है- यह विकास के स्तर पर निर्भर करता है। इसलिये, इस संदर्भ में अर्थव्यवस्था में आय का स्तर तथा समाज में विकास की अवस्था विशेषकर महत्त्वपूर्ण हैं।

कुछ वस्तुओं को पेटेंट के क्षेत्र से बाहर रखने का तर्क इसी उद्देश्य से अनुसरित है। बागवानी तथा कृषि की विधियों तथा भोजन को इससे बाहर रखा गया है क्योंकि बहुत बड़े अनुपात में जनसंख्या अपनी जीविका के लिये कृषि पर निर्भर है तथा गरीबों की भोजन तक के लिये क्रय-क्षमता कम है; जबकि दवाएँ तथा चिकित्सा इसलिये बाहर हैं क्योंकि करोड़ों लोगों की मूलभूत स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच ही नहीं है।

द्वितीय, यह ज्ञान-धारकों या नवाचारियों के लिये पुरस्कार सुनिश्चित करने का प्रयास करता है, लेकिन साथ ही साथ एकाधिकारी लाभों अथवा उन अर्द्ध-किरायों (Quasi-rents) को सीमित करने का भी लक्ष्य रखता है, जो उस इकाई द्वारा अर्जित किया जा सकता है जो प्रौद्योगिकी का वाणिज्यीकरण अथवा वैज्ञानिक ज्ञान को एक बाज़ार-उत्पाद के रूप में परिवर्तित करती है। अनिवार्य लाइसैंसिंग का यही तर्क है। पेटेंट अधिनियम में दो मूल सिद्धांत हैं: पेटेंट आविष्कारों को प्रोत्साहित करने के लिये तथा यह सुनिश्चित करने के लिये कि आविष्कार भारत में व्यावहारिक प्रयोग में आते हैं, के लिये प्रदान किये जाते हैं; तथा पेटेंट केवल पेटेंट कराने वालों को पेटेंट उत्पादों पर एकाधिकार का लाभ उठाने के लिये प्रदान नहीं किये जाते हैं।

तीसरे, यह एक ऐसे वातावरण के निर्माण का प्रयास करती है जो मौजूदा तकनीकों के प्रसार में तथा नई तकनीकों के विकास में सहायक हो, क्योंकि प्रौद्योगिकी ऐसे समाज के

यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा 2011

Directions for the following 27 (Twenty-seven) items: *Read each of the following* ***seven passages*** *and answer the items that follow. Your answers to these items should be based on the passages only.*

निम्नलिखित 27 (सत्ताइस) प्रश्नांशों के लिये निर्देश: *निम्नलिखित* ***सात लेखांशों*** *में से प्रत्येक को पढ़िये और उनके उपरांत दिये गए प्रश्नांशों के उत्तर दीजिये। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल लेखांशों पर ही आधारित होने चाहियें।*

PASSAGE–1

For achieving inclusive growth there is a critical need to rethink the role of the State. The early debate among economists about the size of the Government can be misleading. The need of the hour is to have an enabling Government. India is too large and complex a nation for the State to be able to deliver all that is needed. Asking the Government to produce all the essential goods, create all the necessary jobs, and keep a curb on the prices of all goods is to lead to a large cumbersome bureaucracy and widespread corruption.

The aim must be to stay with the objective of inclusive growth that was laid down by the founding fathers of the nation and also to take a more modern view of what the State can realistically deliver.

This is what leads to the idea of an enabling State, that is, a Government that does not try to directly deliver to the citizens everything that they need. Instead, it (1) creates an enabling ethos for the market so that individual enterprise can flourish and citizens can, for the most part, provide for the needs of one another, and (2) steps in to help those who do not manage to do well for themselves, for there will always be individuals, no matter what the system, who need support and help. Hence we need a Government that, when it comes to the market, sets effective, incentive-compatible rules and remains on the sidelines with minimal interference, and, at the same time, plays an important role in directly helping the poor by ensuring that they get basic education and health services and receive adequate nutrition and food .

लेखांश-1

समावेशी संवृद्धि की प्राप्ति के लिये राज्य की भूमिका पर पुनर्विचार की गंभीर आवश्यकता है। सरकार के आकार के विषय में अर्थशास्त्रियों के बीच हुई आरंभिक बहस भ्रामक हो सकती है। समय की आवश्यकता है कि एक सामर्थ्यकारी सरकार हो। राज्य सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, यह भारत राष्ट्र के विशाल और जटिल स्वरूप को देखते हुए आसान नहीं है। सरकार सभी अनिवार्य वस्तुओं का उत्पादन करे, सभी आवश्यक नौकरियों का सृजन करे, और सभी वस्तुओं की कीमतों पर नियंत्रण रखे, ऐसी अपेक्षा विशाल बोझिल नौकरशाही और व्यापक भ्रष्टाचार की ओर ले जाएगी।

लक्ष्य यह होना चाहिये कि राष्ट्र के संस्थापकों ने जिस समावेशी संवृद्धि का उद्देश्य रखा था, हम उसके साथ बने रहें और साथ ही इसके प्रति एक अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक दृष्टिकोण अपनाएँ कि राज्य यथार्थत: क्या प्रदान कर सकता है।

यही एक सामर्थ्यकारी राज्य के विचार की ओर ले जाता है, अर्थात्, एक ऐसी सरकार जो नागरिकों को उनकी आवश्यकता की हर चीज़ की प्रत्यक्षत: पूर्ति करने का प्रयास नहीं करती। बल्कि, (1) वह बाज़ार के लिये एक सामर्थ्यकारी लोकाचार का सृजन करती है ताकि व्यष्टिक उद्यम फल-फूल सके, और नागरिक, अधिकांश भाग के लिये, एक-दूसरे की आवश्यकताओं के लिये प्रावधान कर सकें; और (2) वह ऐसे लोगों की मदद के लिये आगे आती है जो स्वयं अपनी बेहतरी नहीं कर पाते, क्योंकि कैसी भी व्यवस्था क्यों न हो, कुछ लोग हमेशा ऐसे होते हैं जिन्हें सहारे और मदद की आवश्यकता होती है। अत: हमें एक ऐसी सरकार की ज़रूरत है जो बाज़ार के मामले में प्रभावी, प्रोत्साहन-अनुकूल नियम स्थापित करे और न्यूनतम हस्तक्षेप करती हुई हाशिये पर बनी रहे, और साथ ही साथ, निर्धनों को शिक्षा और स्वास्थ्य की बुनियादी सुविधाएँ तथा पर्याप्त पोषण और आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए उनकी प्रत्यक्ष सहायता करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाए।

यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा 2012

Directions for the following 32 (Thirty-two) items: *Read the following eight passages and answer the items that follow each passage. Your answers to these items should be based on the passages only.*

PASSAGE–1

Education, without a doubt, has an important functional, instrumental and utilitarian dimension. This is revealed when one asks questions such as 'what is the purpose of education?'. The answers, too often, are 'to acquire qualifications for employment/upward mobility', 'wider/higher (in terms of income) opportunities', and 'to meet the needs for trained human power in diverse field for national development'. But in its deepest sense education is not instrumentalist. That is to say, it is not to be justified outside of itself because it leads to the acquisition of formal skills or of certain desired psychological – social attributes. It must be respected in itself. Education is thus not a commodity to be acquired or possessed and then used, but a process of inestimable importance to individuals and society, although it can and does have enormous use value. Education then, is a process of expansion and conversion, not in the sense of converting or turning students into doctors or engineers, but the widening and turning out of the mind – the creation, sustenance and development of self-critical awareness and independence of thought. It is an inner process of moral-intellectual development.

1. What do you understand by the 'instrumentalist' view of education?
   (a) Education is functional and utilitarian in its purposes.
   (b) Education is meant to fulfill human needs.
   (c) The purpose of education is to train the human intellect.
   (d) Education is meant to achieve moral development.

निम्नलिखित 32 (बत्तीस) प्रश्नांशों के लिये निर्देश: *निम्नलिखित* ***आठ परिच्छेदों*** *को पढ़िये और उसके उपरांत प्रत्येक परिच्छेद के आधार पर दिये प्रश्नांशों के उत्तर दीजिये। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिये।*

परिच्छेद-1

शिक्षा का, निस्संदेह, एक महत्त्वपूर्ण कार्यपरक, नैमित्तिक तथा उपयोगितावादी आयाम होता है। यह तब उद्घाटित होता है जब कोई इस तरह के प्रश्न पूछे, जैसे कि 'शिक्षा का प्रयोजन क्या है?' बहुधा इसके उत्तर होते हैं, 'रोज़गार/ऊर्ध्वगामी गतिशीलता के लिये अर्हताएँ अर्जित करना', 'और व्यापक/उच्चतर (आय के संदर्भ में) अवसर प्राप्त करना', 'राष्ट्रीय विकास हेतु विविध क्षेत्रों में प्रशिक्षित जन-शक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करना। परंतु अपने गहनतम अर्थ में शिक्षा नैमित्तिक नहीं है। कहने का आशय यह है, कि इसका स्वयंमात्र से परे औचित्य नहीं बताया जा सकता, क्योंकि यह औपचारिक कौशलों या कतिपय निश्चित वांछित मनोवैज्ञानिक-सामाजिक गुणों के अर्जन की ओर ले जाती है। यह स्वयं में ही समादरणीय है। इस तरह शिक्षा कोई वस्तु नहीं है जिसे अर्जित कर, या जिससे स्वयं को संपन्न कर, तत्पश्चात उसका इस्तेमाल किया जाए, बल्कि यह व्यक्तियों तथा समाज के लिये अपरिमित महत्त्व रखने वाली प्रक्रिया है, यद्यपि इसमें अपार उपयोग-मूल्य हो सकता है और होता है। अतएव शिक्षा विस्तारण एवं रूपांतरण की प्रक्रिया है, विद्यार्थियों को इंजीनियरों या डॉक्टरों में बदलने के अर्थ में नहीं, बल्कि मन को विस्तारण एवं परिवर्तन-सृजन पोषण एवं आत्म-विवेचनात्मक बोध का विकास तथा विचार की स्वतंत्रता प्रदान करने के अर्थ में। यह नैतिक-बौद्धिक विकास की आंतरिक प्रक्रिया है।

1. आप शिक्षा के 'नैमित्तिक' दृष्टिकोण से क्या समझते हैं?
   (a) शिक्षा अपने प्रयोजनों में कार्यपरक व उपयोगितावादी है।
   (b) शिक्षा का उद्देश्य मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति है।
   (c) शिक्षा का प्रयोजन मानव बुद्धि को प्रशिक्षित करना है।
   (d) शिक्षा का उद्देश्य नैतिक विकास की प्राप्ति है।

यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा 2013

Directions for the following 23 (twenty three) items:

Read the following nine passages and answer the items that follow each passage. Your answers to these items should be based on the passages only.

PASSAGE -1

The subject of democracy has become severely muddled because of the way the rhetoric surrounding it has been used in recent years. There is, increasingly, an oddly confused dichotomy between those who want to 'impose' democracy on countries in the non-Western world (in these countries' 'own interest', of course) and those who are opposed to such 'imposition' (because of the respect for the countries' 'own ways'). But the entire language of 'imposition', used by both sides, is extraordinarily inappropriate since it makes the implicit assumption that democracy belongs exclusively to the West, taking it to be a quintessentially 'Western' idea which has originated and flourished only in the West.

But the thesis and the pessimism it generates about the possibility of democratic practice in the world would be extremely hard to justify. There were several experiments in local democracy in ancient India. Indeed, in understanding the roots of democracy in the world, we have to take an interest in the history of people participation and public reasoning in different parts of the world. We have to look beyond thinking of democracy only in terms of European and American evolution. We would fail to understand the pervasive demands for participatory living, on which Aristotle spoke with far-reaching insight, if we take democracy to be a kind of a specialized cultural product of the West.

It cannot, of course, be doubted that the institutional structure of the contemporary practice of democracy is largely the product of European and American experience over the last few centuries. This is extremely important to recognize since these developments in institutional formats were immensely innovative and ultimately effective. There can be little doubt that there is a major 'Western' achievement here.

निम्नलिखित 23 (तेईस) प्रश्नांशों के लिये निर्देश: *निम्नलिखित* ***नौ परिच्छेदों*** *को पढ़िये और उनके नीचे आने वाले प्रश्नांशों के उत्तर दीजिए। इन प्रश्नांशों के आपके उत्तर केवल इन परिच्छेदों पर ही आधारित होने चाहिये।*

परिच्छेद-1

हाल के वर्षों में, लोकतंत्र के विषय को लेकर उसके आस-पास जिस प्रकार से शब्दाडंबर प्रयुक्त हुए हैं, उसके फलस्वरूप यह विषय अत्यंत संभ्रमपूर्ण हो गया है। गैर-पश्चिमी विश्व के देशों पर लोकतंत्र 'अधिरोपित' करने के समर्थकों (वस्तुत: इन देशों के 'स्वहित' में ही), और ऐसे 'अधिरोपण' के विरोधियों (उन देशों के 'अपने तौर-तरीकों' के लिये समादर होने के कारण) के बीच एक बढ़ता हुआ, विचित्र रूप से भ्रांत द्विभाजन बन गया है। किंतु, इन दोनों ही पक्षों के द्वारा प्रयुक्त 'अधिरोपण' की पूरी भाषा असाधारण रूप से असंगत है, क्योंकि इससे यह अस्पष्ट धारणा बनती है कि लोकतंत्र अनन्य रूप से पश्चिमी देशों से ही संबंध रखता है, यह मानते हुए, कि यह सर्वोत्कृष्टता से 'पश्चिमी' विचार है जो केवल पश्चिम में ही जन्मा और फला-फूला।

किंतु इस अभिधारणा को, और इससे विश्व में लोकतांत्रिक प्रथा की संभावना के बारे में जनित निराशावाद को, औचित्यपूर्ण ठहराना बहुत कठिन होगा। प्राचीन भारत में स्थानीय लोकतंत्र के अनेक प्रयोग किये गए हैं। सचमुच, विश्व में लोकतंत्र की जड़ों को समझने के लिये हमें विश्व के विभिन्न भागों में हुई जन-सहभागिता और लोक-विवेचन के इतिहास में रूचि लेनी होगी। यूरोपीय और अमेरिकी क्रमविकास के आधार पर हमें मात्र लोकतंत्र के विचारण के परे देखना होगा। यदि हम लोकतंत्र को पश्चिम का एक प्रकार का विशेषीकृत सांस्कृतिक उत्पाद मान लें, तो अरस्तू ने दूरगामी अंतर्दृष्टि के साथ सहभागी जीवन की जिन व्यापक मांगों के विषय में बात की थी, उन्हें समझने में हम असफल हो जाएंगे।

वास्तव में इस पर संदेह नहीं किया जा सकता कि लोकतंत्र की समकालीन प्रथा का सांस्थानिक ढाँचा अधिकांश रूप में यूरोप और अमेरिका के गत कुछ शताब्दियों में हुए अनुभवों की देन है। इसे पहचानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सांस्थानिक प्रारूपों में ये विकास अत्यधिक नवपरिवर्तनशील और अंतत: प्रभावी हुए। इसमें कोई संशय नहीं हो सकता कि यहाँ एक प्रमुख 'पश्चिमी' उपलब्धि है।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596